

बालक रूपु मुरारी (१०८)

साईं साहिब जे जन्म दिवस जी आज बसंत बहारी आ।

दीननि बंधू दासनि वत्सल अबल चंद्र अवितारी आ॥

हर्ष की लहर आ हरि हंथ छाईं नर नारी सभु द्रियनि वाधाई

अमां सुखदेवी हिंय हुलसाईं आ

द्रिसी द्रिसी पंहिजो बहुगुण बालक वार वार बलहारी आ॥

वार भगुअड़ा सिर ते सूंहनि नर नारियुनि जा मन था मोहिनि

हर हर जानिब मुखिड़ो जोहिनि

पलक विसारे सूरति सुहणी दिल में सभिनी धारी आ॥

बालक ज़ाओ शोभा सागर कोट काम खां रूप उजागर

देव मुनियुनि खां गुणनि में आगर

ऊ आं ऊ आं जे बदले में कई राम नाम किलकारी आ॥

परा प्रेम जो रूपु रसीलो दीन दुखियुनि जो वाह वसीलो

हीणनि हामी हिमथ ऐं हीलो

खलिक जो खालिक विसु जो वाली बालक रूपु मुरारी आ॥

अमड़ि अंडण में बांबिड़ा पाए मात पिता मन मोदु वधाए

मधुरी मुश्कनि चितु चुराए

लटकि लटकि रही लाल भाल ते नन्ही अलक धुंधुरारी आ॥

ब्राल रूप साईं मन भावन कोट तीर्थ खां भी अति पावन
मधुर मधुर सुर श्री सीय पीय गावन
नची नची करे केल मनोहर सुर नर मुनि सुखकारी आ॥

श्री मैगसि चंद्र मनोहर बचिड़ो सरल सनेही संतु आ सचिड़ो
श्री राम नाम रस रंग में रचिड़ो
भू मण्डल में भगति भाव जी फूली अजु फुलवाड़ी आ॥